MASTER OF ARTS

IN

JAINOLOGY & PRAKRIT SAHITYA

Syllabus

(Semester scheme)

M. A. Semester I & II-2012-13,
M. A. Semester III & IV- 2013-14
Onwards

FACULTY OF HUMANITIES

MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSTIY:

UDAIPUR

MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSTIY: UDAIPUR

MASTER OF ARTS IN JAINOLOGY & PRAKRIT SAHITYA

M A Sem I & II-2012-13,

M A Sem III & IV- 2013-14

1. **Duratation of the Course:** The Master of Arts (Jainology and Prakrit Sahitya) course will be of four semester duration to be conducted in two years. Each semester will be of approximately five months (minimum 90 working days in a semester) duration.

2. **Eligibility:** Candidates seeking admission to the first semester of Master of Arts in Jainology and Prakrit Sahitya must have a B.A. or an equivalent degree with 50% marks. Candidates who have studied Jainology and Prakrit Sahitya honors at B.A. level will be preferred.

3. **Admission:** Admission will be made on the basis of the fifty percent weightage to the marks obtained in the entrance examination conducted by the Department and fifty percent weightage to total marks obtained at the senior secondary and graduation level. The entrance examination shall be of multiple choice nature. It will be of 2 hrs. duration and will carry 100 marks. There will be total 100 questions of objective type. (Each correct answer carrying 1 marks).

4. **Seats: 40**

5. **Course Structue: M.A. First Year, Jainology & Prakrit Sahitya**

Paper No.	**Paper Code**	Paper Name	**L-T-P**	**Ext.**	**Int.**	**Total**
SEMESTER-I						
I	41541	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा	3-1-0	75	25	100
II	41542	प्रहसन एवं पालि	3-1-0	75	25	100
III	41543	अर्द्धमागधी एवं प्राकृत कवि	3-1-0	75	25	100
IV	41544	शौरसेनी प्राकृत	3-1-0	75	25	100
V	41545	जैनधर्म, दर्शन एवं महात्मा गांधी	3-1-0	75	25	100
			15-5-0	**375**	**125**	**500**

SEMESTER-II						
I	42541	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण	3-1-0	75	25	100
II	42542	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र	3-1-0	75	25	100
III	42543	अर्द्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि	3-1-0	75	25	100
IV	42544	महाराष्ट्री प्राकृत	3-1-0	75	25	100
V	42545	बौद्ध दर्शन, समाज एवं कला	3-1-0	75	25	100
			15-5-0	**375**	**125**	**500**

M.A.Second Year : Jainology & Prakrat Sahitya

SEMESTER-III						
I		पाण्डुलिपि सम्पादन	3-1-0	75	25	100
II		प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा	3-1-0	75	25	100
III		जैन आगम, ध्यान एवं योग	3-1-0	75	25	100
IV		जैन सिद्धान्त एवं दर्शन	3-1-0	75	25	100
V		जैन धर्म, समाज एवं संस्कृति	3-1-0	75	25	100
			15-5-0	**375**	**125**	**500**
SEMESTER - IV						
I		प्राकृत शिलालेख एवं छंद	3-1-0	75	25	100
II		प्राकृत भाषा विज्ञान	3-1-0	75	25	100
III		जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य	3-1-0	75	25	100
IV		जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा	3-1-0	75	25	100
V		जैन कला एवं स्थापत्य	3-1-0	75	25	100
		Total	**15-5-0**	**375**	**125**	**500**
		Grand Total		**1500**	**500**	**2000**

एम.ए. – जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

(सामान्य निर्देश)

अ– प्राकृत शिक्षण का माध्यम हिन्दी है। अतः प्रश्न पत्र हिन्दी में पूछे जायेंगे। परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में लिख सकेंगे।

ब– प्रत्येक इकाई में से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

स– प्रश्नों का आन्तरिक विकल्प नई परीक्षा प्रणाली के अनुसार होगा।

द– एम. ए. प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर (प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर) एवं एम.ए. द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर (तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर) होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर में पाँच– पाँच प्रश्नपत्र होंगे। एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य में 75–75 अंकों के 3–3 घंटे के प्रश्न–पत्र होंगे।

(खण्ड – अ)

इस भाग में 45 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। ये प्रश्न विकल्प सहित होंगे।
(45 अंक)

(खण्ड – ब)

इस भाग में पाँच विवेचनात्मक प्रश्न प्रत्येक इकाई से दिए जायेंगे, जिनमें सेतीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रम्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300–400 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
(10 ग 3 त्र 30 अंक)

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर

इस सेमेस्टर में 75–75 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 25–25 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं।

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : Paper Code 41541

प्रश्न पत्र – प्रथम	**कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा**	**75 अंक**
इकाई एक	कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1–12 तक सम्पा. ए.एन.उपाध्ये, प्राकृत विद्या मण्डल, अहमदाबाद	15 अंक
इकाई दो	वज्जालग्गं की 20 गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद सम्पा. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य – डॉ.के. सी.सोगानी, गाथा 1–20	15 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	15 अंक
इकाई चार	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 1 से 41 तक का अभ्यास, आठ वाक्यों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद पूछना	15 अंक
इकाई पांच	प्राकृत की परम्परा का परिचय (प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)	15 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. कुवलयमाला भाग–2, सम्पा. डॉ.ए.एन.उपाध्ये
2. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन – प्रो.डॉ.प्रेमसुमन जैन
3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ.नेमिचन्द शास्त्री
4. जैन धर्म – आचार्य सुशील मुनि
5. जैन धर्म – डॉ.राजेन्द्र मुनि शास्त्री
6. प्राकृत स्वंय शिक्षक – डॉ.प्रेमसुमन जैन
7. प्राकृत रचना सौरभ – डॉ.के.सी.सोगानी